धर्म परिवर्तन नहीं जीवन परिवर्तन चाहिये

शिष्य थॉमसेन

पिछले कुछ वर्षों से सारे भारत में धर्म परिवर्तन एक बहुत बड़ा विषय बना हुआ है, एक विवाद चल रहा है, क्या धर्म परिवर्तन सही है? इत्यादि सवाल उभरते रहते हैं।

धर्म परिवर्तन यदि धन या शक्ति के प्रभाव से, या समाज में ऊँचा स्थान हासिल करने के इरादे से हो तो वह निरर्थक है, अनावश्यक है, और धोखा है।

यदि हम चारों तरफ नज़र डालें और अखबार पढ़ें तो हम देखेंगे कि धर्म की आड़ में समाज में लोगों को लूटा जाता है, धोखा दिया जाता है और अत्याचार किया जाता है। हत्याएं होती हैं, व आतंक फैलाया जाता है, धर्मस्थल पर कब्जे के लिये लड़ाइयाँ लड़ी जाती हैं, यह सब देखकर आपके मन में कैसा विचार आता है? क्या ऐसी गतिविधियों से एक जीवित, प्रेमी, दयालु, और करुणामय, क्षमादायी और धैर्यवान परमेश्वर संबंधित हो सकता है? सच तो ये है, कि सभी धर्मों में झूठे व लालची अत्याचारी व हिंसक लोग घुसपैठ किये हुये हैं।

जो कि परम ईश्वर के आत्मिक संसार का भौतिक मूल्य लगाते रहते हैं, और पवित्र परम ईश्वर के विरोधी होकर शैतान और पाप की शक्तियों के गुलाम बन जाते हैं।

प्रभु यीशु मसीह का धर्मगुरुओं से संघर्ष और फिर उनके हाथों मृत्युदंड

प्रभु यीशु मसीह ईसाई धर्म चलाने नहीं आये थे। उनका पंथ नये कानूनों या नियमों का एक संग्रह नहीं था। प्रभु यीशु मसीह जगत की ज्योति थे। वे मनुष्यों के जीवन थे। उनका पवित्र जीवन मनुष्यों के लिये आत्मिक जीवन का स्रोत था (बाइबल-यूहन्ना)।

प्रभु यीशु मसीह ने सांसारिक धर्मों के बंधनों का विरोध किया, जो यहूदी धर्मावलंबी अपने कर्मों, रीतिरिवाज़ों और कट्टरपंथ पर घमंड करते थे। उनसे प्रभु यीशु ने कहा, ''कि परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य में अन्यजाति के लोग भी प्रवेश करने पायेंगे और धर्म के पाखंडी बाहर रह जायेंगे।'' हां, वे लोग जो मन के दीन हैं, अपने पापी जीवन से दुःखी हैं, पापमोचन चाहते हैं, और सच्चे हृदय से बुराई से तोबा करते हैं ऐसे लोग जो पवित्रता चाहते हैं, और झूठ व अन्याय का मुकाबला निःस्वार्थ सेवा से करते हैं, उनका मिलन सच्चे जीवित और सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्त्ता से स्वर्गराज्य में अवश्य होगा। वे मोक्ष के भागी होंगे। उनकी संगति एक ऐसे परम ईश्वर के साथ होगी, जिसका अस्तित्व सृष्टि से पहले था, और सर्वसृष्टि के समाप्त हो जाने के बाद भी रहेगा। परम ईश्वर जीवन का स्रोत है और सच्चाई यह है कि ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्त्ता कोई निर्जीव वस्तु नहीं है, पर एक

सनातन सर्वशक्तिमान जीवित ईश्वर है, जो अपना पवित्र जीवन मनुष्यमात्र को जिसे उसने अपने स्वरूप में रचा है, देना चाहता है।

ये कैसा जीवन है? ऐसे जीवन का परिचय स्वयं ईश्पुत्र प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं जी कर दिया। मानव स्वरूप धारण करके परमेश्वर स्वयं अवतरित हुये, आज से करीब 2000 साल पहले।

जिस तरह एक पिता अपने बच्चे की बीमारी से तो घृणा करता है, पर अपने बच्चे से अपनी जान से ज्यादा प्रेम करता है, उसी तरह बाइबल बताती है, कि परम ईश्वर हमारे सृष्टिकर्त्ता पिता हैं जो हमारे पापी स्वभाव से तो घृणा करते हैं, पर मनुष्यमात्र से गहरा प्रेम करते हैं। पाप वो बीमारी है जिसका यदि परमेश्वर द्वारा इलाज न हो तो मानव नरक के अनन्त नाश में पहुँच जात है।

इसलिए बाइबल में कहा गया है, ''परमेश्वर प्रेम है (बाइबल) ईश्पुत्र प्रभु यीशु मसीह जब इस दुनियां में आये तो उन्होंने सिर्फ प्रेम का संदेश दिया। और ये प्रेम इस तरह प्रभावित हुआ जब उन्होंने मनुष्यमात्र के पाप मोचन के लिये यज्ञ हेतु अपने आप को क्रूस पर समर्पित किया।

पवित्र बाइबल में प्रेम के गुण इस तरह से लिखे हुए हैंः प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालु है, और वह ईर्ष्या नहीं करता प्रेम डींग नहीं मारता, अहंकार नहीं करता, अभद्र व्यवहार नहीं करता, अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुराई का लेखा नहीं रखता। अधर्म से आनंदित नहीं होता है, परन्तु सत्य से आनंदित होता है, सब बातें सहता है, सब बातों पर विश्वास करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धैर्य रखता है, प्रेम कभी मिटता नहीं है'' (बाइबल 1 कुरि.13:4-6)।

पाखण्ड का विरोध

प्रभु यीशु मसीह ने बाहरी दिखावे के धर्म का विरोध किया, पाखण्ड का पर्दाफाश किया। उन्होंने मानवजाति को सिखाया कि पाप सिर्फ कर्म से ही नहीं, पर मन और हृदय के विचारों और उद्देश्यों में भी अदृश्य रूप से बीज के रूप में बना रहता है। जिस तरह एक बुरे फल का गुण उसके बीज में छिपा रहता है, और पत्ते या पेड़ की छटाई करने से सही नहीं हो पाता है, वैसे ही अच्छे बीज से ही अच्छा फल प्राप्त होता है। हमारे बुरे कर्म पाप के फल या बाहरी स्वरूप हैं, बुरे विचार व उद्देश्य उनके बीज हैं।

बुराई का जन्म विचारों में व हृदय में अदृश्य रूप से होता है इसीलिये प्रभु यीशु ने कहा, कि बरतन को बाहर से धोने से ही काम नहीं चलेगा, पर उसे अंदर से भी स्वच्छ करना होता है।

प्रभु यीशु ने उदाहरण देकर समझाया कि हत्या पाप का परिणाम अर्थात् फल है, लेकिन इसका स्रोत (बीज) क्रोध है, जो हृदय में अदृश्य रूप से बसा रहता है, इसलिए क्रोध को प्रभु यीशु ने हत्या के बराबर कहा है, और क्रोध को पाप कहा है।

इस तरह उन्होंने समझाया, व्यभिचार पाप का फल है, लेकिन ये बीज के रूप में बुरी आँखों में व वासना से ग्रसित विचारों के रूप में अंतःकरण में बसा रहता है।

प्रभु यीशु ने कहा, भले काम को यदि हम स्वार्थी उद्देश्य से करते हैं तो वो भी पाप है। उन्होंने कहा कि अपने से सब प्यार करते हैं लेकिन परम ईश्वर का जीवन अपने दुश्मन को प्यार करना होता है, गरीबों को खाना खिलाना है, बेघर को अपने घर मे शरण देनी है, प्यासे को पानी पिलाना है, बीमारों की दवा करनी है, कैदियों की खबर रखना है, और नंगों को कपड़े पहनाना है।

एक बार प्रभु यीशु के पास मंदिर में धर्मगुरु लोग एक व्यभिचारी स्त्री को लाए जो सेक्स के पाप में पकड़ी गई थी। और कहने लगे कि हमारे धर्म के कानून के अनुसार ऐसी पापिनी स्त्री को पत्थरों से मारकर मृत्युदंड देना चाहिये, लेकिन प्रभु यीशु ने उन्हें जवाब दिया कि जो व्यक्ति निष्पाप है (कर्म, विचारों, और उद्देश्यों में) वही पहला पत्थर इस स्त्री को मारे। ये सुनकर सारे पाखण्डी धर्मगुरु वहाँ से भाग गये, इसके बाद प्रभु यीशु ने स्वयं उस स्त्री के पापों को क्षमा किया और उससे कहा, जाओ फिर पाप न करना।

प्रभु यीशु ने समाज के कमजोर व दलित वर्गो के साथ सामाजिक संबंध रखा, जिन्हें समाज तिरस्कृत करता था। उनके घर व गाँव में वो रहा। उनके साथ बैठकर भोजन किया। उनके बीमारों को ठीक किया। कोढ़ियों को प्रेम से हाथ से छूकर उन्हें रोग मुक्त किया ये सब ऐसे समय जब समाज उन्हें शहर से बाहर धकेल देता था और उन्हें देखना भी नहीं चाहता था। प्रभु यीशु ने अंधों की आँखे सही की। भूखों को खाना खिलाया, और बीमारों को चंगाई दी। दुःखी समाज को परमेश्वर के प्रेम, शांति व सनातन जीवन का शुभसंदेश दिया।

प्रभु यीशु ने पापी समाज जिसमें शराबी, वेश्याएं और दुष्कर्मी थे, उन्हें तिरस्कृत नहीं किया, पर उन्हें प्रेम किया। उनके साथ वे उठे, बैठे, भोजन किया, व परमेश्वर के प्रेम को उन लोगों तक पहुँचाया, और पापमोचन का रास्ता बताया।

प्रभु यीशु एक बार सोखार नाम के अछूतों के एक गाँव में रहे। वहाँ के निवासियों को समाज ने यहूदियों के यरुशलेम स्थित प्रसिद्ध मंदिर में प्रवेश करने से वंचित कर रखा था। प्रभु यीशु ने उन लोगों को समझाया कि न तो मनुष्य निर्मित पूजागृहों में, न ही नदी–पहाड़ पर बैठकर जीवित परमेश्वर की आराधना, भक्ति की जा सकती है, पर हर व्यक्ति चाहे कहीं भी क्यों न हो, यदि वो जीवित व सच्चे परम ईश्वर को अपनी अंतरात्मा से पापमोचन के लिये पुकारे, और उसकी आराधना करे, तो ये सच्ची भक्ति ईश्वर को स्वीकार्य है। बाइबल में साफ बताया गया है कि हर मनुष्य पापी है और उसे परम ईश्वर के पास मन फिराकर लौटना होगा।

बाइबल में प्रभु यीशु मसीह के अवतरण के बारे में इस तरह से लिखा है:-

''जैसा प्रभु यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा, वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया और गुलाम का रूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया, और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि क्रूस की मृत्यु भी सह ली'' (बाइबल फिलि-2)

प्रभु यीशु अपने शिष्यों के पांव धोते हैं

जगत की सबसे अनहोनी घटना, ईश्पुत्र प्रभु सृष्टिकर्त्ता अपने बारह चेलों के पाँव धोते हैं, और अपने अनुयायियों को निर्देश देते हैं कि वे भी इसी तरह अपने अधिकार और शक्ति का परित्याग करके नम्रता और दीनता धारण कर मानवमात्र की निःस्वार्थ सेवा करें, यही परमेश्वर को स्वीकार्य भक्ति है, इसके अलावा जो कुछ है, वे पाखण्ड व धोखा है।

धर्म के लिये नहीं मानवमात्र के पापमोचन हेतु प्रभु यीशु ख्रिस्त क्रूस की मृत्यु सहते हैं।

साधारण जनता ने नहीं पर धर्मगुरुओं ने प्रभु यीशु मसीह को क्रूस का मृत्युदण्ड दिया। लेकिन ये परम पिता ईश्वर की योजना थी, क्योंकि इस यज्ञ के द्वारा प्रभु यीशु मसीह ने सारे मानव मात्र के पापों की सज़ा अपने ऊपर उठा ली। पाप का दंड जो मृत्यु है, उसे उन्होंने अपने ऊपर उठा लिया, और इसके फलस्वरूप आज जो कोई प्रभु यीशु से पापों की क्षमा हेतु निवेदन करता है, उसे वे क्षमादान देते हैं व मोक्षदान देकर अनंतजीवन का वरदान देते हैं।

मनुष्य का पापी स्वभाव मिटाया जाता है, और जीवन से शैतान का प्रभाव परम आत्मा के पवित्र दान से दूर किया जाता है।

सैंकड़ों लोगों के देखते-देखते चालीस दिन के पश्चात् उनका स्वर्गारोहण हुआ। आज वे स्वर्ग सिंहासन पर विराजमान हैं, जीवित हैं, अपने अनुयायियों की प्रार्थनाओं को सुनते हैं और परम ईश्वर का नया जीवन जीने में मदद करते हैं। शीघ्र ही वे इस दुनिया का न्याय करने के लिये सब की नज़रों में आसमान से नीचे उतरेंगे। प्रभु यीशु सभी धर्मों की सीमाओं से ऊपर हैं, चाहें वह वर्तमान ईसाई धर्म ही क्यों न हो।

प्रभु यीशु मसीह आपको धर्म के बंधनों में बाँधते नहीं हैं, पर पवित्र परम ईश्वर का जीवन जीने के लिये स्वतंत्र करते हैं, हमें धर्म परिवर्तन नहीं जीवन परिवर्तन चाहिये।

धर्म के पाखण्ड को चुनौती देते हुये शिष्य थॉमसेन परमेश्वर का जीवन जीने का आह्वान करते हैं।

<u>मोक्ष प्रार्थना</u>

हे प्रभु यीशु में कर्म से विचारों और उद्देश्यों से पापी हूँ, आप स्वयं परमेश्वर पुत्र बन कर आये आपने मेरे पापों की कीमत चुकाने के लिये अपना पवित्र खून बहाया और मृत्यु उठाई और आज आप जीवित हैं। आप मेरे पापों कों क्षमा करें मुझे नया जीवन दें।

अपनी पवित्र आत्मा का दानदें, ताकि मैं आपका जीवन पा सकूँ, और सिर्फ आपके मार्ग पर चल सकूँ। आज से मैं आपको अपना गुरु बनाता हूँ। मेरा आपके ऊपर संपूर्ण विश्वास और भरोसा है। ***आमीन्***

SHISHYASHRAM
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088
e-mail:jawabjawab@yahoo.com